श्रीगुरुमाई के वचनों पर ध्यान

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

मकर संक्रान्ति का उत्साह-भाव

मैं सत्संग में से एक और चीज़ पर विचार करती रही हूँ, और वह यह है कि गुरुमाई जी ने मकर संक्रान्ति और भारत में इस पर्व को जिस भावना से मनाया जाता है, उस विषय में क्या कहा था। गुरुमाई जी ने बताया कि लोग इस दिन तिलगुड़ से बनी मिठाइयाँ खाते हैं; वे पतंगें उड़ाते हैं, खेलते हैं, उत्सव मनाते हैं और इस मंगलमय दिन का आनन्द लेते हैं।

गुरुमाई जी से मकर संक्रांति का यह वर्णन सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा। इससे जुड़ी यादों की बहुत-सी झलकियाँ यकायक मेरे मन में कौंध गईं। वह करारी-करारी तिल की चिक्की जो मेरी माँ बनाया करती थीं, कैसे वह मेरे दाँतों में चिपक जाया करती, फिर भी मैं बेसब्री से कुछ और चिक्की उठा लेती। मुम्बई की गगनचुम्बी इमारतों की छतों पर खड़े हुए, उल्लास से चिल्लाते बच्चे जो अपनी बनाई पतंगें उड़ा रहे होते; तरह-तरह के रूप, आकार व रंगों की पतंगों का अनूठा ही प्रदर्शन होता वह। सबसे बढ़कर तो गुरुमाई जी के शब्दों ने मेरे अन्दर वह नयापन और सम्भावना का भाव जगाया जो मेरे लिए गहराई से मकर संक्रान्ति के साथ जुड़ा हुआ है—वह प्रखर प्रकाश, सूर्य का प्रकाश। वह अबाधित आनन्द व उल्लास जो मानो सुनहरे सितारों की सरिता की भाँति तीव्र गति से ऊपर गगन की ओर बढ़ रहा हो।

मकर संक्रान्ति के दिन, ऐसा लगता है कि इस ब्रह्माण्ड की तुला अच्छाई और मिठास की ओर झुक गई है क्योंकि हमने उसे उस ओर झुकाया है। लोग एक-दूसरे के लिए अपना प्रेम व अपनी कृतज्ञता अभिव्यक्त करते हैं। श्रीगुरु के प्रति अपने प्रेम के कारण, हम सिद्धयोगी एकत्र होते हैं; श्रीगुरु ने भगवान के जिस प्रकाश के प्रति हमें जाग्रत किया है, उसकी ऊष्मा में हम स्नान करते हैं, उसमें सराबोर हो जाते हैं। इस दिन, धरती और स्वर्ग के बीच का परदा और भी झीना व पारदर्शी लगने लगता है। यदि ये दोनों लोक आरम्भ से ही अलग-अलग थे तो भी इनके बीच का सम्बन्ध अब अधिक प्रवाही, अधिक सहज लगता है।

गिरिधर के रूप में, बाल कृष्ण की छवि मेरे मन में उभरती है। भगवान श्रीकृष्ण ने देवराज इन्द्र के प्रचण्ड क्रोध से अपने पूरे गाँव की रक्षा की थी। उन सबकी रक्षा करने हेतु उन्होंने अपनी एक उँगली पर पूरा पर्वत उठा लिया और सभी लोग श्रीकृष्ण के चारों तरफ़ एकत्र होकर, पर्वत के नीचे आ गए थे। आशा स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है—धर्मपरायणता और अधिक प्राप्य लगती है—जब हम सब भगवान व श्रीगुरु के आँचल की सुरक्षा में इस प्रकार एक-साथ आ जाते हैं।

सिद्धयोग पथ पर हम जो भी पर्व मनाते हैं, उसका गहरा और विशेष अर्थ होता है। हर पर्व का एक अलग ही भाव है, साथ ही उससे जुड़ा और भी बहुत कुछ होता है। यही वह बात है जो मुझे समझ में आ रही थी जब मकर संक्रान्ति के बारे में बोलते हुए गुरुमाई जी सिखा रही थीं।

और विस्तार से कहूँ तो मैंने गुरुमाई जी के शब्दों से जो सीखा वह यह कि हम इस बात के प्रति हमेशा सजग रहें कि हम कहाँ हैं, हम क्या कर रहे हैं और हम ऐसा क्यों कर रहे हैं।

भारत के सन्तकवि तो अपने श्रीगुरु या आराध्य के सान्निध्य में बिताए गए एक दिन का महिमागान करने के लिए पूरे के पूरे भजनों या अभंगों की रचना कर दिया करते थे। उदाहरण के लिए, मुझे ऐसे कई अवसर याद हैं जब दर्शन व सत्संग के दौरान, गुरुमाई जी सुश्री शाम्भवी क्रिश्चियन, सुश्री विजु कुलकर्णी और सुश्री लक्ष्मी वैल्स जैसी वरिष्ठ सिद्धयोग गायिकाओं से 'आजी सोनियाचा दिनु' नामक अभंग गाने के लिए कहा करती थीं। यह अभंग सन्तकवि, ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा रचित है और इसमें वे कहते हैं : *"आजी सोनियाचा दिनु!* आज स्वर्णिम दिन है!"

शाम्भवी जी, विजु ताई और लक्ष्मी जी असाधारण प्रतिभा और उपलब्धियों की धनी हैं। वे दशकों से सत्संगों के दौरान, दर्शन के समय और सिद्धयोग की रिकॉर्डिंग्स् के लिए गायन की सेवा करती रही हैं। अब तो विश्वभर के सिद्धयोगियों के लिए उनकी आवाज़ें परिचित व पसन्दीदा हो चुकी हैं। अतः जब इनमें से कोई भी "आजी सोनियाचा दिनु" जैसा अभंग गाता है, चाहे वे एकल रूप से गा रही हों या संगीत मण्डली के साथ गा रही हों, उसे सुनना बड़ा ही अलौकिक सुख देता है। हमें उनके गायन में ही "उस दिन के सुनहरेपन" की अनुभूति होती है।

तो मुझे लगता है कि हमें खुद से यह पूछने की आदत डाल लेनी चाहिए : "इस दिन की ऊर्जा, इस दिन का भाव क्या है? वह क्या है जो *इस* दिन को स्वर्णिम बनाता है?" हमें हमेशा इस बात के लिए उद्यम करना चाहिए कि हम स्वयं को इस प्रज्ञान से सम्पन्न करें और इसी के अनुसर विचारपूर्वक, सोच-समझकर बोलें व आचरण करें।

क्या आप इससे सहमत नहीं हैं? क्या आपको नहीं लगता कि हमारा अस्तित्व किसी विशेष, किसी अर्थपूर्ण चीज़ के लिए होना चाहिए? क्या हमें विचारशीलता के साथ, सजगता के साथ नहीं जीना चाहिए?

© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।